महात्मा गांधी

(खण्ड-तीन)

अध्याय 1

मोहन का बचपन

बरसात का दिन था। आसमान में बादल रह-रहकर घिर आते थे। एक बालक उन्हीं की तरफ एकटक देख रहा था। देखते-देखते ही एकदम चिल्ला उठा, 'माँ, माँ देखो, सूरज निकल आया। अब तू पारणा उपवास की समाप्ति पर किया जाने वाला भोजन कर ले।' माँ ज्यों ही बाहर आई, सूरज भगवान बादल की ओट में छिप गए। 'कोई बात नहीं मनु, भगवान की मर्जी नहीं है कि आज पारणा करूँ, भोजन करूँ।'

मनु की माँ ने चौमासे में सूर्यदर्शन होने पर ही भोजन ग्रहण करने का व्रत लिया था। आज सूर्य के दर्शन नहीं हुए तो उसने भोजन नहीं किया। बरसात के दिनों में कई बार सूरज भगवान मनु की माँ को भूखा रखते थे। सूरज के न दिखने पर माँ ने जब भोजन नहीं किया, तब मनु को बहुत बुरा लगा। उसने माँ से पूछा, 'माँ, तू ऐसे कठिन व्रत क्यों करती है?' 'बेटा, तू जब बड़ा हो जाएगा, तब इसका अर्थ समझ जाएगा, अब चल मन्दिर चलें, शिव के दर्शन करें। वहाँ का पुजारी बहुत अच्छे भजन गाता है।'

'माँ, तू शिवालय जाती है, शिव के दर्शन करती है, बालकृष्ण-हवेली जाती है, कृष्ण के दर्शन करती है। राम-मन्दिर जाती है, राम के दर्शन करती है, बापू भी सब मन्दिरों में जाते हैं; लेकिन वे रामायण बड़े प्रेम से सुनते हैं। जब ब्राह्मण दोहे-चौपाई गाता है, तब मुझे बड़ा अच्छा लगता है। और सुन, धाय कहती है कि तू राम-नाम लिया कर तो तुझे भूत-प्रेत का क्या, किसी का भी डर नहीं सताएगा।' और बापू 'हरे राम, हरे कृष्णा' का कीर्तन भी बड़े प्रेम से सुनते हैं तो तू बता माँ, इन तीनों में कौन बड़ा है?' बेटा, तीनों ही बड़े हैं, तीनों ही एक हैं। भगवान के ही ये नाम हैं। देखना, मैं तुझे कभी मनु कहती हूँ और कभी मोन्या भी कह देती हूँ। अरे जब तू बड़ा हो जाएगा तब सब समझने लगेगा।

ऊपर बात करने वाले माँ-बेटे पुतलीबाई और मोहनदास थे। मोहनदास ही बड़े होने पर मोहनदास करमचंद गांधी कहलाए और देशवासियों की सेवा करने के कारण 'महात्मा गांधी के नाम से संसार भर में प्रसिद्ध हुए। मोहन का जन्म आश्विन बदी 12, विक्रम संवत् 1926 अर्थात् 2 अक्टूबर, 1869 ईसवी को काठियावाड़ (सौराष्ट्र) के छोटे-से शहर पोरबंदर में हुआ था। इनके पिता करमचंद गांधी वैश्य थे, वैष्णव धर्म को मानने वाले तथा सत्यभाषी, निडर और न्यायप्रिय थे। अपनी पत्नी पुतलीबाई के समान ही धर्म के कार्यों में श्रद्धा रखते थे। पढ़े-लिखे तो कम थे, परन्तु व्यवहार कुशल बहुत थे। घर-बाहर के पेचीदे मामलों को बड़ी चतुराई से सुलझा देते थे। पोरबंदर अंग्रेजी राज्य की छत्रछाया में एक छोटी-सी रियासत थी, उसी के ये दीवान थे। राजकोट और बीकानेर रियासत में भी इन्होंने इसी पद पर कार्य किया था।

रियासतों में अंग्रेजी सरकार अपने प्रतिनिधि रखती थी। उन्हें पॉलिटिकल एजेंट कहते थे। ये राजाओं और

उनकी प्रजा की हलचलों पर निगराखी रखा करते थे। एक बार राजकोट के असिस्टेंट पॉलिटिकल एजेंट ने वहाँ के राजा की (जो ठाकुर साहब कहलाते थे) शान के खिलाफ कुछ अंड-बंड बातें कह डाली। करमचंद गांधी को उस समय अंग्रेज की अशिष्टता सहन नहीं हुई। उन्होंने तुरन्त उसका विरोध किया। गोरे साहब को एक काले दीवान का विरोध बिल्कुल अच्छा नहीं लगा। उसने क्षमा माँगने की जिद की। जब इन्होंने इन्कार कर दिया, तब उन्हें डराने-धमकाने लगा। कुछ देर के लिए उसने उन्हें हवालात में भी बंद रखा। परन्तु करमचंद मामूली आदमी नहीं थे, जो उस गोरे की घुड़की से डर जाते। उन्होंने माफ़ी माँगने से बार-बार इन्कार किया। अंत में गोरे को झुकना पड़ा और उन्हें छोड़ दिया गया।

करमचंद को सगे-सम्बन्धी और मित्र 'काबा-गांधी' भी कहते थे। स्पष्टवादी होने के साथ-साथ वे बड़े क्रोधी और हठी भी थे। अपनी आज्ञा का उल्लंघन कभी बर्दाश्त नहीं करते थे। अपने निर्णय पर दृढ़ रहने की शिक्षा मोहन को अपने पिता से ही मिली थी।

शिष्टाचार में भूल के कारण प्रायश्चित

एक बार घर में भोजन पर कई लोग निमंत्रित हुए अतिथियों में मोहन ने अपने मित्र को भी निमंत्रण भेजा था, पर किसी कारण से वह भोजन में शामिल नहीं किया जा सका। भोजन में मुख्य रूप से आम खिलाया जाने वाला था। मित्र को वह आम नहीं खिला सका, इससे मोहन को बड़ा दुख हुआ। इसलिए उसने मौसम-भर आम नहीं खाए, यद्यपि आम उसका प्रिय फल था। शिष्टाचार के पालन मे जो गलती हुई थी, उससे वह फिर न हो, इस विचार से उसने यह संकल्प किया था।

चित्र 1. गांधीजी का जन्म स्थान

स्कूल की पढ़ाई

मोहन का बचपन पोरबंदर में बीता। वहीं 'लूल्या मास्टर' की प्रायमरी शाला में उसकी पढ़ाई प्रारम्भ हुई। वह शाला उनके घर के पास थी। मास्टर साहब लंगड़े थे। इसलिए उन्हें लोग 'लूल्या मास्टर' कहते थे। जब मोहन के पिता पोरबंदर से राजकोट रियासत के दीवान बनकर गए, तब उनके साथ मोहन भी गया। उस समय उसकी अवस्था 7 वर्ष की थी। 12 वर्ष की अवस्था तक उसने राजकोट में अपनी पढ़ाई की। इस बीच वह अपने गुरुओं से एक बार भी झूठ नहीं बोला। लजालु स्वभाव होने के कारण वह लड़कों से बहुत कम बात करता था। उसे डर लगा रहता था कि कहीं कोई मेरी किसी बात पर दिल्लगी न उड़ाने लगे।

नकल के इशारे की उपेक्षा

हाईस्कूल के पहले वर्ष की परीक्षा के समय की एक घटना है। अंग्रेज इंस्पेक्टर परीक्षा लेने आया। उसने मोहन की कक्षा के विद्यार्थियों को पाँच अंग्रेजी शब्द लिखने को कहा। उनमें एक शब्द 'केटल' था। मोहन ने इस शब्द के हिज्जे गलत लिखे थे। पास ही खड़े शिक्षक ने इशारे से उसे चेताया, परन्तु उसके दिमाग़ में यह बात न आई कि मास्टर साहब, सामने लड़के की स्लेट देखकर हिज्जे ठीक करने का इशारा कर रहे हैं। मोहन बच्चा ही था फिर भी वह समझता था कि मास्टर इसलिए वहाँ है कि कोई लड़का दूसरे की नकल न कर पाए। मास्टर मोहन की ईमानदारी देखकर बड़े प्रसन्न हुए और अपने कार्य से मन ही मन लज्जित।

पितृ-भक्ति और सत्यनिष्ठा की प्रेरणा

मोहन पाठशाला की पुस्तकों के अलावा दूसरी पुस्तकें पढ़ने में रुचि नहीं लेता था। एक दिन लहर में आकर उसने पिताजी की 'श्रवण पितृ-भक्ति नाटक' नामक पुस्तक पढ़ डाली। उस पुस्तक का उसके मन पर बड़ा असर पड़ा। श्रवण अपने माता-पिता को काँवर में बैठाकर यात्रा कराने ले जा रहा था, यह चित्र भी उस पुस्तक में था। उसका मन श्रवण के समान बनने के लिए ललक उठा।

इसी बीच राजकोट में एक नाटक-मंडली आई, जो हरिश्चन्द्र-नाटक खेलती थी। मोहन ने अपने पिता से नाटक देखने की आज्ञा प्राप्त कर उस नाटक को देखा और वह उससे बहुत अधिक प्रभावित हुआ। मन ही मन हरिश्चन्द्र नाटक के दृश्यों को देखता और सत्य-पालन के कारण हरिश्चन्द्र को जो-जो कष्ट भोगने पड़े, उनकी कल्पना कर घंटों रोया करता। सत्य का पालन करना मनुष्य का धर्म है, इससे भगवान भी प्रसन्न रहते हैं, ऐसे विचार उसके मन में उठने लगे। इस नाटक ने मोहन के जीवन में सत्यनिष्ठा का अंकुर जमा दिया।

नियम भंग से दुखी

मोहन को सबसे बड़ा दुःख तब होता था, जब उससे कोई नियम भंग हो जाता था। स्कूल में हेडमास्टर ने सबके लिए खेल अनिवार्य कर रखा था। मोहन की खेलों में रुचि नहीं थी। फिर भी वह खेल के समय उपस्थित रहता था। एक बार वह उपस्थित न रह सका, जिससे हेडमास्टर ने उसकी अच्छी पिटाई की। पिटाई से तो उसे दुख नहीं हुआ, दुख इस बात से हुआ कि उसने पिटाई का काम किया, स्कूल के नियम का पालन नहीं किया।

ऊका भंगी से सहानुभूति

भंगियों को लोग क्यों नहीं छूते, यह बात मोहन की समझ में नहीं आती थी। उसके घर ऊका नाम का भंगी सफाई करने आया करता था। माँ जब उसे छूने से मना करती, तब वह कहता, 'अपने धर्म की पोथियों में अछूतों को न छूने की बात कहाँ लिखी है? रामायण में लिखा है कि ऋषि वशिष्ठ ने केवट को अपनी छाती से लगाया था और राम ने शबरी के जूठे बेर खाए थे। ये दोनों शूद्र अछूत वर्ण के माने जाते थे, तो फिर तू मुझे ऊका से दूर रहने के लिए

क्यों कहा करती है?' माँ बेटे की बुद्धि की मन ही मन प्रशंसा करती थी, पर उसकी शंका दूर नहीं कर पाती थी।

विवाह

उस समय छोटे बच्चों का विवाह हो जाता था। मोहन जब 13 वर्ष का हुआ था, तभी उसका विवाह कस्तूरबा से हो गया था। वे काबा गांधी के मित्र की लड़की थीं। मोहन और कस्तूरबा एक ही उम्र होने के कारण हमजोली की भाँति साथ-साथ खेलते थे। परिवार के धार्मिक वातावरण में मोहन और कस्तूरबा के महान संस्कारों का निर्माण हो रहा था।

माता-पिता का प्रभाव

मोहन के माता-पिता धार्मिक, सत्यवादी और अपनी बात के धनी थे। पिता जिसे वचन देते, उसे अवश्य पूरा करते, जो प्रतिज्ञा करते, उसको अवश्य निभाते। पिता शिव मंदिर में जाते थे, राम-मंदिर और कृष्ण-मन्दिर में भी जाते थे। उनके साथ लाड़ला मोन्या भी जाता था। मंदिर का पुजारी कभी नरसी मेहता के भजन, कभी मीराबाई के और कभी तुलसी के पद भी गाता था। मोन्या उन्हें बड़े चाव से सुनता था। जब पुजारी नरसी मेहता का 'वैष्णव जन तो तेणे कहिए जे, पीड़ पराई जाणे रे' भजन मस्ती में गाता, तो वह भी मस्त हो गुनगुनाने लगता। उसके बापू दीवान थे, इसलिए सभी धर्म के प्रतिष्ठित लोग उनके पास आते थे और धार्मिक चर्चा करते थे। मोहन उन्हें सुनता रहता था। इस तरह माता-पिता की धार्मिक उदारता का उस पर प्रभाव पड़ना स्वाभाविक था।

चित्र 2. बालक मोहन

काठियावाड़ की रियासतें पिछड़ी हुई थीं। लोग सीधे-सादे ढंग से रहते थे। मोहन दीवान का लड़का था, वह कोट, धोती, सफेद मोज़े, स्लीपर और ज़रीदार टोपी पहनता था।

शाला में मोहन एक संकोचशील बालक था, जो अन्य बालकों से कुछ अलग-अलग सा रहता था, उसने सन् 1887 में मैट्रिक की परीक्षा पास कर ली। उसके बाद भावनगर के सामलदास कॉलेज में नाम लिखाया। शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी होने से वहाँ मोहन को पढ़ने में कुछ कठिनाई का अनुभव होता था। यही कारण था कि उसका मन कॉलेज की पढ़ाई से उचट गया और वह थोड़े दिनों के बाद ही पढ़ाई छोड़कर घर लौट आया। अब प्रश्न उठा कि आगे क्या करें?

विलायत जाने की तैयारी

भावजी दवे मोहन के पिता के घनिष्ठ मित्र थे। परिवार वालों ने उन्हें बुलाया। आते ही उन्होंने मोहन से पूछा, 'बता तू क्या पढ़ेगा?' मोहन ने कहा, 'मैं डॉक्टरी पढ़ना चाहता हूँ।' 'अरे! तू मुर्दे कैसे चीरेगा! न-न, यह काम तुझसे नहीं होगा। देख, हम चाहते हैं, तू अपने बापू की तरह पोरबंदर या राजकोट का दीवान बने और इसके लिए कानून का ज्ञान बहुत ज़रूरी है। अच्छा बोल, कानून पढ़ने विलायत जाएगा?' अंधा क्या चाहे, दो आँखें। मोहन ने तुरंत कह दिया, 'काका, मैं विलायत जाऊँगा। तुम्हारी सलाह ठीक है, मैं कानून पढ़ूँगा।'

मोहन को दवे काका की सलाह से बेहद खुशी हुई, पर माँ दुविधा में पड़ गई - मेरा मोन्या तीन वर्ष तक मेरी आँखों से दूर होगा, यह मैं कैसे सहन करूँगी? उसने सुन रखा था कि विलायत जाकर लोग मांस-मदिरा के व्यसन में पड़कर बिगड़ जाते हैं। माँ ने अपने मन की उलझन बेटे को समझाई। मोहन ने कहा, 'बा (गुजराती में माँ को बा भी कहते हैं) तू विश्वास मान, मैं भगवान का नाम लेकर प्रतिज्ञा करता हूँ कि जिन बातों से तू डरती है, उन्हें मैं कभी नहीं करूँगा।'

माँ फिर भी झिझकती रही। उसने कहा, 'मैं ज़रा बेचरजी स्वामी से पूछ लूँ। अगर उन्होंने भी दवे भाई की तरह राय दी तो मैं जाने दूँगी।' बेचरजी स्वामी जैन साधु थे, गांधी-परिवार के बड़े हितैषी थे। उनसे जब पूछा गया, तब उन्होंने मोहन की माँ को समझाया- 'पुतलीबाई, मोन्या को विलायत भेजने में मत झिझको; लड़का होनहार है, शीलवान है। तुम्हारी बात मानेगा। बिगड़ेगा नहीं जाने दो।' जैन साधु की सलाह मानकर पुतलीबाई ने अपने मन को समझा लिया और अपनी पुतली में बसने वाले मोहन को विलायत जाने की अनुमति दे दी।

मोहन के प्रस्थान का दिन आ गया। राजकोट हाईस्कूल के शिक्षकों और विद्यार्थियों ने उसे मान-पत्र देने के लिए सभा बुलाई और उसके गुणों की खूब प्रशंसा की। अंत में जब मोहन उत्तर देने के लिए खड़ा हुआ तो उसके पैर डगमगाने लगे। हाथ काँपने लगे। कागज़ में जो लिखकर ले गया था, उसे बड़ी कठिनाई से अटक-अटककर पढ़ सका। उसका सार यही था कि आशा है, मेरे भाई मेरी तरह विलायत जाएँगे और लौटकर देश-सेवा का काम कर नाम कमाएँगे। ऐसा लगा, मानो स्वयं मोहन का अपना भविष्य बोल रहा हो।

अब घर में माँ से विदा लेने की दुखद घड़ी आई। माँ बेटे बड़ी देर तक लिपटे रोते रहे। अंत में शांत हो माँ ने बड़े कष्ट से आशीर्वाद दे बिदा दी। फिर पत्नी कस्तूरबा के पास गए। दोनों कुछ नहीं बोले। मोहन ने कुछ क्षण खड़े होकर बिदा ली। वे उससे कैसे पूछते, 'जाऊँ?' और वह कैसे कहती, 'मत जाओ'।

राजकोट से अपने बड़े भाई के साथ मोहन बंबई (मुंबई) पहुँचा। वहाँ जाति के मुखिया ने उसे बुलाकर बहुत डाँटा, क्योंकि मोढ़ वैश्य जाति में उस समय तक कोई विलायत नहीं गया था। उसने जाति-सभा बुलाई और मोहन को उसमें उपस्थित रहने को कहा। जैसी आशा थी, सभा में कई लोगों ने विरोध किया और कहा कि यदि करमचंद का लड़का विदेश जाता है तो उसे जाति से निकाल देना चाहिए। मोहन ने दृढ़ता से कहा, 'मैंने विलायत जाना तय कर लिया है। मैं अपना निश्चय नहीं बदल सकता। आप लोग खुशी से मेरा बहिष्कार कर सकते हैं।'

मोहन की विलायत-यात्रा के मार्ग में एक कठिनाई और थी, विलायत में रहने का खर्च कहाँ से आएगा? पिता ने धन-संग्रह नहीं किया था। जातिवालों की सहायता मिलने का तो प्रश्न ही नहीं था। कहीं से छात्रवृत्ति मिलने की भी आशा नहीं थी। मोहन को चिन्तित देखकर उसके बड़े भाई लक्ष्मीदास ने उसके विलायत में रहने का सारा खर्च अपने ऊपर ले लिया। मोहन की चिन्ता दूर हो गई। उसने कुछ दिन बंबई (मुंबई) में रहकर विलायती पोशाक सिलवाई और उसे पहनना सीख लिया। सन् 1888 की चार सितम्बर को मोहन ने अब 'एम.के. गांधी' (मोहनदास करमचंद गांधी) के रूप में जहाज के तीसरे दर्जे में लंदन की ओर प्रस्थान किया।

अभ्यास

1. मोहनदास की माँ को बरसात के दिनों में अक्सर भूखा क्यों रहना पड़ता था?
2. करमचंद गांधी को राजकोट की हवालात में क्यों बंद किया गया था?
3. माता-पिता के स्वभाव का मोहन पर क्या प्रभाव पड़ा?
4. कक्षा में नकल न करने से मोहन के किस गुण का पता चलता है?
5. मोहनदास पर 'श्रवण पितृ-भक्ति' पुस्तक का क्या प्रभाव पड़ा?
6. हरिजनों के प्रति बचपन में ही मोहन की क्या भावना थी?
7. विलायत जाने से पहले मोहन ने माँ को कौन-कौन से वचन दिए थे?
8. जातिवालों ने मोहन के विलायत जाने का विरोध क्यों किया?
9. रिक्त स्थानों की पूर्ति करो-
   (क) मोहनदास का जन्म सन् ..... में हुआ था।
   (ख) मोहनदास के पिता ..... मैं दीवान थे।
   (ग) मोहनदास की पत्नी का नाम ..... था।
   (घ) मोहनदास ..... की शिक्षा प्राप्त करने के लिए लंदन गए थे।
   (ङ) हरिश्चन्द्र नाटक को देखकर मोहन को ..... की प्रेरणा मिली।

अब करने की बारी

1. आपके सबसे अच्छे मित्र को खाने में क्या-क्या पसंद है उसकी सूची बनाइए।
2. श्रवण कुमार और राज हरिश्चन्द्र से सम्बन्धित कहानियों को लिखिए।
3. आप बड़े होकर क्या बनना चाहते हैं और क्यों? कक्षा में अपने साथियों से चर्चा कीजिए।